

बोझ नहीं, कमाल का है गधा (अश्व पालन पर उद्यमिता विकास)

डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ. अमित कुमार केशरी
विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि विज्ञान केन्द्र कौशाम्बी

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.22685624>

परिचय

गधे काम करने की एक विस्तृत श्रृंखला और गैर-कामकाजी भूमिकाएं निभाते हैं, जिनमें से बाद में मांस और दूध का उत्पादन करने के साथ-साथ न्यूट्रास्यूटिकल्स, सौंदर्य प्रसाधन, पर्यटन, सिल्विकल्चर और ओनोथेरेपी के तेजी से लोकप्रिय क्षेत्रों में उपयोग किया जाना शामिल है। धोबी लोग गंदे कपड़ों को नदियों या तालाबों में ले जाने के लिए घोड़े का उपयोग करते थे और फिर साफ किए गए कपड़ों को अपने घरों में वापस कर देते थे। कहा जाता है कि उनके दूध में चिकित्सीय गुण होते हैं। कृषि से संबंधित कार्य और परिवहन। वे अभी भी भारतीय चुनाव आयोग द्वारा अलग-अलग स्थानों पर मतदान पेटियों को परिवहन के लिए उपयोग किए जाते हैं, जो कारों या अन्य जानवरों के लिए दुर्गम हैं। वे उन खेतों में भी बहुत मददगार हो सकते हैं जो खाद जैसे सामानों को स्थानांतरित करने के लिए ट्रिप सिंचाई का उपयोग करते हैं। अन्य वाहन, जैसे ट्रैक्टर, नुकसान पहुंचा सकते हैं। फार्मास्यूटिकल अनुप्रयोगों में इम्यूनो-माड्यूलैटर में गधे के दूध का उपयोग शामिल है। गधे का दूध दुनिया भर के सौंदर्य उत्पादों में एक लोकप्रिय और महंगा घटक है। गधे के दूध में उच्च लाइसोजाइम स्तर होता है, जिसे आंत के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद माना जाता है। गधे के गोबर के लिए एक अन्य आवेदन टैंक में गोबर की उच्च-माइक्रोबियल सामग्री जोड़कर सेप्टिक टैंकों को बहने से रोक रहा है। वे भेड़ियों और कोयोट्स के खिलाफ अच्छे प्रलोभन गार्ड हैं और जानवरों के प्राकृतिक रक्षक के रूप में कार्य करते हैं गधे के दूध और त्वचा की मांग, साथ ही मनोरंजन और उपचार के लिए गधों का उपयोग हाल ही में बढ़ गया है। गधे के दूध में एंटीऑक्सीडेंट, कैल्शियम, विटामिन सी, बी और ई, लाइसोजाइम और लैक्टोफेरिन सभी प्रचुर मात्रा में होते हैं। गाय के दूध की तुलना में, इसमें ओमेगा-फैटी एसिड की अधिक सांद्रता होती है जो सूजन को कम करती है।

आनुवंशिक फिंगरप्रिंटिंग के अनुसार, घरेलू गधे का पूर्वज अफ्रीकी जंगली गधा था। लगभग 5000 साल पहले, मिस्र और ईरान में व्यापार और परिवहन में उपयोग के लिए गधे को पालतू बनाया गया। ताकत और

सहनशक्ति के लिए उनकी प्रतिष्ठा को देखते हुए, गधे परिवहन और कृषि दोनों में रोजगार के लिए आदर्श हैं। वे अपने शरीर के बोझ से कहीं अधिक बोझ उठा सकते हैं। अपनी बुद्धि, सुंदरता और कठोरता के कारण, गधे किफायती और उपयोगी पशुधन बनाते हैं। ये अधिक तापमान और परिस्थितियों की एक सीमा में जीवित रह सकते हैं, क्योंकि वे बीमारियों और परजीवियों के प्रतिरोधी हैं और अन्य जानवरों की तुलना में कम भोजन और पानी की आवश्यकता होती है। उनके पास एक लंबा जीवनकाल है, कुछ 40 साल तक जीवित रह सकते हैं।

जैसे-जैसे मशीनीकरण आगे बढ़ रहा है, गधों का उपयोग तेज गति से कम हो गया है। 20 वीं पशुधन जनगणना के अनुसार, स्वदेशी गधों की आबादी में लगभग 62% की भारी गिरावट दर्ज की गई। इस लुप्तप्राय प्रजाति को बचाने के लिए आवश्यक संरक्षण रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है। हालांकि, गधे के दूध और मांस, इसके उप-उत्पादों की मांग में वृद्धि देखी गई है। जो यूरोपीय बाजारों में और विशिष्ट आहार उत्पादों के रूप में व्यावसायीकृत हैं। हमारे देश में भी, कई उभरते हुए किसान-उद्यमी गधों के दूध को अपने अद्वितीय रियोलॉजिकल गुणों के कारण व्यावसायिक उद्यम के रूप में अपना रहे हैं।

आई.सी.ए.आर.- नेशनल रिसर्च सेंटर ऑन इक्विन्स, हिसार भी गधा डेयरी इकाई विकसित करने और गधे के दूध के विशेष गुणों का अध्ययन करने के उद्देश्य से इस दिशा में काम कर रहा है। गधे के दूध के विभिन्न उत्पादों और गधे से खेती को उद्यमिता के रूप में कैसे अपनाया जाए, इसके बारे में मूल्यांकन करने के इस प्रयास में “गधा पालन पर उद्यमिता विकास कार्यक्रम” पर भी कार्य कर रही है। जिसमें पालकों को प्रशिक्षण, प्रजनन, दूध दुहने और गधों के दूध के मूल्यवर्धन पर सिद्धांत और व्यावहारिक प्रशिक्षण और नवाचार उत्पाद और पैकेजिंग समाधान शामिल हैं।

पशुधन गणना

भारतीय पशुधन गणना 2019, के अनुसार हाल के वर्षों में गधों और खच्चरों की आबादी में गिरावट का

खुलासा किया गया है। वर्तमान में देश में 112,000 गधे हैं, वहीं वर्ष 2012 में भारत में 9,677,000 गधे थे। 2019 में, राजस्थान में 23,000 से अधिक गधे हैं, जो भारत के किसी भी राज्य में सबसे अधिक हैं।

भारतीय गधे, भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के मूल निवासी हैं, जो थार रेगिस्तान, कच्छ और राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में पाए जा सकते हैं। भारतीय गधे कठोर व सहन करने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं। गधे अविश्वसनीय रूप से लचीले और फुर्तीले होते हैं। पीठ पर पृष्ठीय धारियां और पैरों पर जेबरा के निशान पाये जाते हैं। हालांकि गधों में विभिन्न प्रकार के कोट रंग हो सकते हैं, सबसे आम हल्के और गहरे भूरे रंग के होते हैं। उनके पास अक्सर कंधे के क्रॉस, गहरे कान के निशान, सफेद थूथन, आंखों के छल्ले, सफेद पेट और आंतरिक पैर होते हैं। राजस्थान में गधे एक आवश्यक भारवाही जानवर हैं, जो छोटे, हल्के और गहरे भूरे रंग के गधे अन्य मसौदा गतिविधियों और देहाती प्रवास में उपयोग किए जाने वाले भारवाही बल के लिए महत्वपूर्ण हैं। खानाबदोश पशुपालकों द्वारा ज्यादातर ईंट भट्टों में ईंटों को स्थानांतरित करने के लिए और ग्रामीण और शहरी परिवहन के लिए वायवीय पहिया गाड़ियों में उपयोग किया जाता है। जिन क्षेत्र में गधा पालन या अपने दैनिक जीवन कार्य हेतु रखते हैं, वे उनके आवास, चारा और चारे की आवश्यकताओं और स्वास्थ्य देखभाल की समुचित व्यवस्था भी उनकी फेनोटाइपिक विशेषताएं के आधार पर करते हैं। भारत में गधों की आबादी में लगातार कमी के कारण

- पारंपरिक उपयोगों में गिरावट: गधों को खेती और परिवहन जैसे श्रम-गहन के लिए नियोजित किया गया है। लेकिन जैसे-जैसे ये कार्य अधिक स्वचालित होते जाते हैं, गधों की आवश्यकता कम होती गई, जिसके परिणामस्वरूप उनकी संख्या में गिरावट आई है।
- मशीनीकरण: कम दूरी के कार्गो परिवहन के लिए स्वचालित ट्रॉलियों के बढ़ते उपयोग के परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में गधे कम आम होते जा रहे हैं।
- सुरक्षा का अभाव: भारत में, गधों को अक्सर अन्य पशुधन जानवरों के समान सुरक्षा नहीं मिलती है। उपेक्षा, दुर्व्यवहार और शोषण के परिणामस्वरूप उनकी संख्या घट रही है जो वे अक्सर सहन करते हैं।
- आवास का नुकसान: भारत के बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण द्वारा गधों के मूल आवास पर आक्रमण किया जा रहा है,

जो जानवरों को रहने के लिए पर्याप्त स्थानों से वंचित कर रहा है।

- जागरूकता और शिक्षा की कमी: गधों का मूल्य और उनकी संख्या को संरक्षित करने की आवश्यकता भारत में व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है। ज्ञान और शिक्षा की कमी के लिए उनकी जनसंख्या में गिरावट को जिम्मेदार ठहराया गया है।
- अवैध व्यापार: जिनका उपयोग पारंपरिक दवाओं और सौंदर्य उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता है। इस अवैध व्यापार ने उनकी आबादी में कमी में और योगदान दिया है।
- गधे के मांस की तस्करी: भारत और विदेशों दोनों में बड़े पैमाने पर तस्करी होती है। माना जाता है कि गधी का मांस पीठ दर्द और अस्थमा को कम करता है और पुरुषों में पौरुष क्षमता बढ़ाता है।
- गधों की खाल का व्यापार: हर साल लाखों गधों को उनकी खाल के लिए मार दिया जाता है। गधे की त्वचा का अधिकांश निर्यात चीन को जाता है ताकि देश की “इजियाओ” की बढ़ती आवश्यकता को पूरा किया जा सके, जो पारंपरिक चीनी चिकित्सा में इस्तेमाल होने वाला एक प्रकार का जिलेटिन है। खाल को उबालने से इजियाओ निकलता है, जिसे एनीमिया और रक्त परिसंचरण के रोगों में इलाज होता है।

गधे के लिए पालन व्यवस्था

गधे गर्म जलवायु में पैदा होते हैं, इसलिए उन्हें हमेशा एक स्थिर आश्रय चाहिए। ठंडे तापमान वाले क्षेत्रों के लिए पूरी तरह से कवर या तीन तरफा छाया ठीक है। प्रति गधा लगभग 4.5 वर्ग मीटर एक अच्छा स्थान अनुपात है। उनके अभयारण्यों और पानी तक पहुंच होनी चाहिए, साथ ही एक खतरा मुक्त, सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण भी होना चाहिए। हालांकि, यदि आवश्यक हो, तो उन्हें एक स्थान पर रखने से उनके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंच सकता है। शुष्क वातावरण इनके लिए हमेशा फायदेमंद होता है। उन्हें एक स्थान तक सीमित रखना अस्वास्थ्यकर है। यदि कोई व्यक्ति सीमित संख्या में गधों का पालन कर रहा है, तो वे जमीन के एक छोटे से टुकड़े से शुरू कर सकते हैं। उन्हें आम तौर पर अन्य मवेशियों की तुलना में चरने के लिए कम जगह और व्यायाम की आवश्यकता होती है। गधे

मजबूत जानवर हैं, जिन्हें कम रखरखाव की आवश्यकता होती है और स्वस्थ होते हैं, जिसका अर्थ है कि उन्हें बहुत अधिक आहार की आवश्यकता नहीं होती है। वे जल्दी से प्रजनन करते हैं। गधों को कुछ इनपुट के साथ व्यवस्थित रूप से उठाया जा सकता है। गधा पालन मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है। गधे की खाद मिट्टी की स्थिति में सुधार के लिए आदर्श है, क्योंकि यह पोषक तत्वों से भरपूर है। छोटे पैमाने के उत्पादक जिनके पास महंगे उर्वरकों और फीडस्टॉक तक पहुंच नहीं है, वे विशेष रूप से इससे लाभान्वित हो सकते हैं।

गधे के पोषण व्यवस्था

गधे के पोषण हेतु उच्च गुणवत्ता वाले जौ या जई के भूसे और घास तक सीमित पहुंच आहार का हिस्सा होना चाहिए। गधों को बहुत अधिक गुड़-आधारित उत्पादों, मीठे चारे या उच्च ऊर्जा वाले अनाज की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे उत्पादों को देना आमतौर पर हाइपरलिपिमिया, गैस्ट्रिक अल्सर और शूल के उद्भव जैसे स्वास्थ्य मुद्दों का कारण बनता है। साथ ही साथ ताजा मीठे जल की आवश्यक है। गधे अपनी प्यास को झेलने के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसे पानी की उनकी आवश्यकता के लिए गलत नहीं माना जाना चाहिए। राशन में ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन और खनिजों की आपूर्ति के लिए सांद्रता का उपयोग किया जाता है। पोषण की आवश्यकता के से अधिक हो तो देखभाल की जानी चाहिए। जई, मक्का, जौ, गेहूं, चना, अनाज अक्सर आहार में कैलोरी के स्रोत के रूप में पूरक होते हैं और स्टार्च सामग्री में उच्च होते हैं। आहार में स्टार्च का उंचा स्तर, हालांकि, गधों में लैमिनाइटिस और अन्य चयापचय संबंधी विकारों के लिए प्रेरक के रूप में होते हैं। पूरक वसा, आमतौर पर वनस्पति तेल के रूप में, कभी-कभी आहार के कैलोरी घनत्व को बढ़ाने के लिए अनाज अनाज के बजाय या उसके साथ उपयोग किया जाता है। सामान्यतः यह सिफारिश की जाती है कि तेल की मात्रा कुल राशन के 10 से 15% से अधिक न हो। घास आधारित राशन खिलाए गए गधा को उगाने के लिए पूरक प्रोटीन की अक्सर आवश्यकता होती है, और सोयाबीन भोजन आमतौर पर इसकी स्वाद और उच्च स्तर के सुपाच्य प्रोटीन के कारण जोड़ा जाता है। विटामिन और खनिज सांद्रण या पूरे राशन की पोषक सामग्री को मजबूत करने के लिए विटामिन और खनिज की खुराक को अक्सर सांद्रित मिश्रणों में मिलाया जाता है।

अधिकांश प्राकृतिक चारा और अनाज अनाज में नमक की कमी होती है। क्योंकि गधा पसीने के माध्यम से काफी मात्रा में नमक खो सकते हैं, सोडियम क्लोराइड (छंस्, सामान्य नमक) को अक्सर 0.5 से 1%

की दर से केंद्रित करने के लिए जोड़ा जाता है या नमक ब्लॉक या मुक्त-विकल्प के रूप में सादा, आयोडीनयुक्त, कोबाल्ट-आयोडीयुक्त, या ट्रेस-खनिज नमक के रूप में पेश किया जाता है। गधे के प्रजनन के लिए रखरखाव महत्वपूर्ण है। लगातार चबाने और समानांतर पैर वाले पशु अच्छे प्रजनन के महत्वपूर्ण संकेत हैं। 13 से 14 महीने का गर्भकाल होता है। तीन महीने की उम्र में, मादा गधे वयस्क हो जाते हैं। मादा गधों की मांग अधिक होती है, क्योंकि वे तेजी से परिपक्व होती हैं और दूध प्रदान करती हैं। ब्यात के बाद, बच्चों को कम से कम एक महीने तक सिर्फ स्तन का दूध पिलाया जाना चाहिए। क्योंकि इसे पौष्टिक माना जाता है। इसमें लाइसोजाइम के समान रोगाणुरोधी गुण होते हैं। यह समान तत्वों में अविश्वसनीय रूप से समृद्ध है और प्रतिरक्षा स्थापित करने के लिए उत्कृष्ट है।

स्वास्थ्य देखभाल

स्वास्थ्य रक्षा में पशु को जिन प्रमुख बीमारियों के खिलाफ टीका लगाया जाना है, वे पूर्वी इक्वाइन एन्सेफलाइटिस (ईईई), पश्चिमी इक्वाइन एन्सेफलाइटिस (डब्ल्यूईई), और टेटनस। कुछ क्षेत्रों में, वेनेजुएला के इक्वाइन एन्सेफलाइटिस (वीईई), वेस्ट नाइल वायरस, रेबीज, बोटुलिज्म और इन्फ्लूएंजा महत्वपूर्ण जोखिम हो सकते हैं जिन्हें टीकाकरण कार्यक्रम को मुख्य माना गया है। सुविधा केंद्र के पशु चिकित्सक के परामर्श से उपयुक्त टीकाकरण कार्यक्रम विकसित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जब संकेत दिया जाता है या राज्य या संघीय नियमों के माध्यम से, रोग निगरानी और सर्वेक्षण कार्यक्रमों को भी विकसित और कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

परजीवी नियंत्रण में अधिकांश गधों में आंतरिक और बाह्य परजीवियों का नियंत्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है। आंतरिक परजीवी भार को प्रभावित करने वाले कारकों में गधों का सांद्रण, गधों की आयु, बाड़ों का आकार और प्रकार, पर्यावरण और स्वच्छता तथा अन्य प्रबंधन प्रक्रियाएं शामिल हैं। प्रमुख आंतरिक परजीवी जो गधों के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं, उनमें शामिल हैं, लेकिन बड़े स्ट्रॉन्गिल्स (स्ट्रॉन्गुलस वल्गारिस), छोटे स्ट्रॉन्जाइल्स (40 प्रजातियां), एस्केरिड्स (पैरास्कारिस इक्वारम), बॉट्स (गैस्ट्रोफिलस इंटेस्टाइनलिस), और पिनवॉर्म (ऑक्सीरिस इक्वि) तक सीमित नहीं हैं। बाहरी परजीवी आमतौर पर आंतरिक परजीवियों की तुलना में कम महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन पर्याप्त संख्या में मौजूद होने पर गधों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। टिक्स, जूँ और घुन सबसे आम बाहरी परजीवी हैं और पशुचिकित्सा के परामर्श से एक

उपयुक्त दवा के साथ आसानी से पता लगाया और नियंत्रित किया जा सकता है।

बधियाकरण की प्रक्रिया कुछ हफ्तों से लेकर कई साल की उम्र तक किसी भी उम्र में बधियाकरण किया जा सकता है। सर्जिकल कैस्ट्र किया जाता है। गधों में दर्द या संकट के पुराने संकेतों में लंगड़ापन, वजन घटाने, बालों के झड़ने या खुले घाव, भूख न लगना, बार-बार उड़ान के प्रयास या आक्रामकता और अवसाद शामिल हैं। तीव्र रूप से दर्दनाक या तनावग्रस्त, अनुचित पसीना (गर्मी या व्यायाम प्रेरित नहीं), जमीन पर दोहराए जाने वाले रोलिंग, कराहना, दांत पीसना, पिन किए गए कान, जबड़े को बंद करना, बेचैनी, टक-अप आसन, और पेट दर्द के अन्य लक्षण का, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए नियमित रूप से देखभाल करना अतिमहत्वपूर्ण है।

गधा बचाने की रणनीतियाँ

1. भारत में गधों और खच्चरों पर आईएलआरआई के नेतृत्व वाली परियोजना, जो हालांकि कोविड-19 से संबंधित प्रतिबंधों के कारण विलंबित हुई थी, ने राज्य पशुपालन और पशु चिकित्सा विभागों, विश्वविद्यालयों और अन्य हितधारकों के समर्थन से उपरोक्त छह राज्यों में काम शुरू कर दिया है।
2. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने कहा कि घोड़े के कल्याण पर एक राष्ट्रीय नीति गधों की आबादी में गिरावट जैसे मुद्दों को हल करने में मदद करेगी, अन्य चुनौतियों के बीच, मशीनीकरण के तेजी से अपनाने और पर्याप्त संख्या में गधों को बनाए रखने के तरीके की खोजें।
3. राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एनएएस) और आईसीएआर के महानिदेशक ने कहा कि अपनी आजीविका के लिए गधों पर निर्भर किसानों के कल्याण को गैर-गोजातीय दूध को बढ़ावा देकर और गधों के दूध के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करके संरक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने शोधकर्ताओं से यह पता लगाने का आग्रह किया कि क्या गधों के दूध का उपयोग किया जा सकता है फार्मास्युटिकल उद्देश्य जैसे इम्यूनो-मॉड्यूलेटर में। गधों का दूध पौष्टिक होता है और इसका दूध 7,000 से 10,000 रुपये के बीच हो सकता है। इसमें कम कैलोरी और कम वसा होता है और इसमें अन्य दूध की तुलना में अधिक विटामिन डी होता है।
4. अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान (आईएलआरआई) और साझेदार ग्रामीण और शहरी समुदायों में उनके उपयोग पैटर्न की पहचान करने के लिए भारत की गधों और खच्चरों की आबादी का मानचित्रण कर रहे हैं। गधा अभयारण्य (टीडीएस),

यूके द्वारा समर्थित 'भारतीय गधों और खच्चरों की आबादी के मुद्दों का मानचित्रण और संभावित हस्तक्षेप रणनीतियों और साझेदारी की पहचान' परियोजना ने छह भारतीय राज्यों (राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, महाराष्ट्र और बिहार) में हितधारकों की बैठकें और घरेलू सर्वेक्षण आयोजित किए हैं, जिनमें गधों और खच्चरों की एक बड़ी आबादी है।

5. संस्थान और आजीविका कार्यक्रम, उत्पादन और प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका को समझने के लिए और अधिक शोध करने का आह्वान किया। उन्होंने किसानों सहित गधा क्षेत्र के हितधारकों को क्षेत्र के प्रदर्शन में सुधार के लिए नीतियों के साथ आने का भी आह्वान किया।

6. गधों के दूध को बढ़ावा देने और गधा दूध उत्पादकों को बढ़ावा देने के लिए एक सहकारी मॉडल के विकास पर विशेष जोर दिया जाए।

7. गधों के कल्याण के लिए एक राष्ट्रीय गधा उत्पादन कार्यक्रम (एनडीपीपी) स्थापित किया जाए।

8. भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) प्रमाणन गधों दूध पर लागू किया जाए।

9. संबंधित सब्सिडी के साथ गधों के लिए कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम शुरू किया जाए।

10. नस्लों में सुधार, आबादी के झुंड का विस्तार करने और गधों और गधों उत्पादों के निर्यात बाजारों को विकसित करने के लिए स्वदेशी गधों पर ध्यान दिया जाता है।

11. संस्थान और आजीविका कार्यक्रम, ने कहा कि मवेशियों और भैंस के बगल में घोड़े, भारत में कई गरीब, छोटे पैमाने के किसानों की आजीविका का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने घोड़ों के उत्पादन और प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका को समझने के लिए और अधिक शोध करने का आह्वान किया। उन्होंने किसानों सहित गधा क्षेत्र के हितधारकों को क्षेत्र के प्रदर्शन में सुधार के लिए नीतियों के साथ आने का भी आह्वान किया।

12. गधों के दूध को बढ़ावा देने के लिए गधों के दूध और सहकारी मॉडल के विकास पर विशेष जोर दिया जाए।

13. गधों के कल्याण के लिए एक राष्ट्रीय गधा उत्पादन कार्यक्रम (एनडीपीपी) स्थापित किया जाए।

14. भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) प्रमाणन गधों दूध पर लागू किया जाए।

15. भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) प्रमाणन गंधी दूध पर लागू किया जाए।

16. संबंधित सब्सिडी के साथ गंधों के लिए कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम शुरू किया जाए।

17. नस्लों में सुधार, आबादी के झुंड का विस्तार करने और गंधे और गंधे उत्पादों के निर्यात बाजारों को विकसित करने के लिए स्वदेशी गंधों पर ध्यान दिया जाता है।

18. गंधी के दूध के औषधीय और कॉस्मेटिक गुणों का आर्थिक विश्लेषण और उचित विस्तार के माध्यम से पूरी तरह से उपयोग किया जाए।

19. इस परियोजना से उत्पन्न डेटा का उपयोग आईएलआरआई और भागीदारों द्वारा भारत में गंधों के उत्पादन, प्रबंधन और प्रजनन के लिए दिशानिर्देश बनाने के लिए किया जाएगा। यह शोध गंधा क्षेत्र में बाजार लिंकेज और मूल्यवर्धन को भी मजबूत करेगा।

गंधा पालन में बाधाएं

1. गंधे के खेत छोटे हैं और अभी तक भारत में बहुत अच्छी तरह से संरचित नहीं हैं।
2. अपर्याप्त दूध उत्पादन।
3. क्योंकि खाद्य उत्पादों से संबंधित कोई कानून नहीं है, गंधे का दूध उपभोक्ताओं के बीच अधिक से अधिक लोकप्रिय नहीं हो रहा है।
4. सामाजिक वर्जना
5. भूमिहीन किसान अब गंधे के दूध के फायदे और वित्तीय मूल्य से अनजान हैं।
6. गंधों को ज्यादातर भारी वस्तुओं को ढोने के लिए पैक जानवरों के रूप में नियोजित किया जाता है।

गंधी का दूध

“गंधी का दूध और उत्पाद” दुनिया भर में तेजी से पसंद किया जा रहा है, खासकर चीन और भारत जैसे देशों में। इसका दूध एक अत्यधिक पौष्टिक, कम वसा वाला “फार्मा फूड” है, जो पोषण संरचना के आधार पर मानव दूध से काफी मिलता जुलता है और गाय के दूध का एक हाइपोएलर्जिक विकल्प है। यह एक रोग प्रतिरोधक, रक्त संचार में सुधार और विटामिन (ए, बी, सी, डी, ई), कैल्शियम और ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर होता है। इसमें वसा और केसिन की मात्रा कम होती है, जिससे यह आसानी से पच जाता है। लैक्टोज, कैल्शियम और फास्फोरसयुक्त, जो हड्डी के स्वास्थ्य में सहायक होता है। मधुमेह रोधी और इन्सुलिन प्रतिरोध को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। त्वचा को हाइड्रेट करने में, एंटी एजिंग और ब्राइटनिंग हेतु साबुन और लोशन में भी उपयोग किया जाता है।

कोविड-19 के प्रकोप के दौरान गंधे के दूध के उपयोग में वृद्धि के कारण गंधे के पालन की मांग बढ़ रही है, क्योंकि इसके फायदे हैं, जिसमें इसकी उच्च विटामिन सामग्री और कमजोर प्रणाली को मजबूत करने की क्षमता शामिल है। भारत में गंधे के दूध का एक बड़ा चमचा 50 रुपये की कीमत है। शिशुओं के माता-पिता द्वारा दूध विशेष रूप से पसंद किया जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह बच्चों को स्वस्थ बनने और प्रतिरक्षा में सुधार करने में मदद करता है।

गंधी का दूध कच्चा या किण्वित रूप से सेवन किया जा सकता है। गंधी का दूध गाय के दूध या अन्य डेयरी उत्पादों की तरह व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं है। गायों की तुलना में गंधी काफी कम दूध का उत्पादन करते हैं, और निष्कर्षण प्रक्रिया अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती है। इसलिए, गंधी के दूध को अक्सर एक लक्जरी या विशेष उत्पाद माना जाता है, जो उच्च लागत में योगदान देता है। सीमित उत्पादन (0.5-1.3 लीटर दूध) के कारण यह अत्यधिक मूल्यवान है। मई 2026, देश में 1 लीटर गंधी के दूध की कीमत रु 3000 और मुख्य उत्पाद रु. 7000 तक के मार्केट में उपलब्ध है।

गंधा पालन भारतीय बाजार

इंटरनेशनल लाइवस्टॉक रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईएलआरआई) और उसके सहयोगी ग्रामीण और शहरी दोनों समूहों में उनके उपयोग के पैटर्न को निर्धारित करने के लिए जनवरी 2020 से भारत में गंधों की आबादी का मानचित्रण कर रहे हैं। गंधा पालन भारतीय बाजार में महत्वपूर्ण क्षमता वाला एक व्यवसाय है जिसे अभी तक खोजा नहीं गया है। इटली, फ्रांस और रूस जैसे देशों में, यह एक व्यापक रूप से स्वीकृत प्रथा है। दुनिया में लगभग 41 मिलियन गंधे हैं, और चीन 11 मिलियन गंधों के साथ सबसे अधिक आबादी वाला है। भारत में लगभग 0.4 मिलियन गंधों की आबादी है, और उनमें से अधिकांश को ड्राफ्ट उद्देश्यों के लिए नियोजित किया जाता है। उनकी ताकत के कारण, गंधों का उपयोग आमतौर पर कृषि और परिश्रम में किया जाता है, जिससे उन्हें कई उद्योगों में मूल्यवान संपत्ति मिल जाती है। इसके अतिरिक्त, गंधे के दूध ने दुनिया के कई क्षेत्रों में लोकप्रियता हासिल की है, जो एक नया लाभदायक स्रोत प्रदान करता है।

खच्चरों, घोड़ों और गंधों के उपयोग और संरक्षण को बढ़ावा देने वाले यूके स्थित अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी संगठन, ब्रुक की भारतीय शाखा द्वारा 2013 के अनुसार, उत्तर प्रदेश के 10 जिलों में 50 ईंट भट्टों में काम करने वाले परिवारों द्वारा अर्जित कुल आवर्ती आय का 80 फीसदी उनके जानवरों की क्षमताओं से आया था। सर्वेक्षण किए गए 200 मालिकों में से 47 ने बताया कि

उनके जानवर उनकी आय का एकमात्र स्रोत थे। इसके अतिरिक्त, गुजरात में डेयरी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा कठिन इलाकों में दूध पहुंचाने के लिए गधों का उपयोग किया जाता है, और लखनऊ में कुम्हारों द्वारा मिट्टी को स्थानांतरित करने के लिए किया जाता है। गधों का घरों और आर्थिक जीवन पर आर्थिक प्रभाव पड़ता है।

कुल मिलाकर, भारत में गधों की आबादी में कई मुद्दों के कारण गिरावट जारी है, जिसमें कृषि विधियों में बदलाव, सुरक्षा की कमी, निवास स्थान में गिरावट, ज्ञान की कमी और अवैध व्यापार शामिल हैं। इस प्रवृत्ति को उलटने के लिए, इन समस्याओं का समाधान करने और गधों की सुरक्षा के मूल्य के बारे में सार्वजनिक समझ बढ़ाने के लिए कारवाई अनिवार्य है।

सारांश

Cite this article:

आशीष कुमार श्रीवास्तव एवं अमित कुमार केशरी. (2026). बोझ नहीं, कमाल का है गधा (अश्व पालन पर उद्यमिता विकास). *Vet Farm Frontier*, 03(08), 34–39. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22685624>

